''अभिज्ञानशाकुन्तल–मंगलाचरण में विराट् प्रकृति''

अखिलेश नारायण मिश्र

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' कविकुलगुरु की सर्वाधिक लोकप्रिय, प्रसिद्ध तथा प्रकृति के सन्निकट रहने वाली कृति है। इस ग्रन्थारम्भ में कविकुलगुरु ने मंगलाचरण में अपने इष्ट व आराध्य शिव के उस स्वरूप को उकेरा है, जो शिव सम्पूर्ण प्रकृति में व उसके भिन्न–भिन्न उपादानों में समाहित हैं। यद्यपि कालिदास जैसे विद्वान् जिनकी भाषा के सार ब्रह्मा, सरस्वती या स्वयं वे ही समझ सकते थे ऐसे महाकवि की पुनीत गिरा को समझने के लिए हम जैसे अज्ञानमण्डित मस्तिष्क रखने वाले के सप्रयास किये गये आयास अलम् नहीं हैं फिर भी जो कुछ बन पड़ा है तथा जहाँ तक अदूरगामी या जड़ बुद्धि पहुँच सकी है।